Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 23rd Oct. 2018, Revised on 28th Oct. 2018; Accepted29th Oct. 2018

आलेख

मूल्य संवर्धन और विद्यालय

* **खुशलता श्रीमाली**, सहायक आचार्य (शिक्षा)
माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)
Email : shrimalikl1982@gmail.com, मोबाइल नं. 9660708781

मुख्य शब्द : मूल्य संवर्द्धन, पाठ्यक्रम, विद्यालयीय गतिविधियाँ, प्रतियोगिताएँ, शिक्षण इत्यादि।

सारांश

प्रस्तुत आलेख में लेखिका ने मानव जीवन के मूल्यों की महत्ता को रेखांकित किया है। विद्यार्थियों के जीवन में मूल्य संवर्द्धनमें विद्यालयों की अपनी महत्ती भूमिका होती है, अतः विद्यालयों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यालय में आयोजित की जाने वाली प्रत्येक गतिविधि का आयोजन विद्यार्थियों में मूल्य संवर्द्धन के संदर्भ में करे, जिससे विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास हो सके। विद्यालयों में पाठ्यक्रमीय एवं पाठ्य–सहगामीय गतिविधियाँ मूल्य केन्द्रित आयोजित की जानी चाहिए। प्रत्येक विषय की विषय–वस्तु में उसकी प्रकृति के अनुसार मूल्य सन्निहित होते हैं, अतः शिक्षकों द्वारा उस विषय–वस्तु में मूल्यों को उजागर करते हुए शिक्षण किया जाना चाहिए। विद्यालय द्वारा समय–समय पर मूल्य केन्द्रित प्रतियोगिताएँ आयोजित की जानी चाहिए तथा मूल्य केन्द्रित गतिविधि (टास्क) विद्यार्थियों द्वारा करवानी चाहिए। मूल्य केन्द्रित गतिविधि (टास्क) एवं प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरुस्कृत भी किया जाना चाहिए।

विषय प्रवेश

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का विशेष महत्व होता है। मूल्य ही व्यक्ति को जीवन जीने की शिक्षा देता है। आज संसार में फैली अशान्ति, अराजकता इस बात का संकेत दे रही है कि मनुष्य में मूल्यों का निरन्तर ह्रास हो रहा है जिसके फलस्वरूप देश में अशान्ति, आतंकवाद, दलबन्दी, वैमनस्यता, घृणा एवं साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता की भावना में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। ऐसी स्थिति में विद्यालय का दायित्व कुछ और बढ़ जाता है। विद्यालय के द्वारा बालकों में संस्कारों का बीजारोपण एवं उनका निरन्तर सिंचन होता है। संस्कारित छात्र अपने आदर्शों और मूल्यों के अनुसार कार्य करता है। निरन्तर अच्छे एवं समाज सम्मत कार्य करने से व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं मूल्यों का सन्तुलित विकास होता है। यद्यपि बालक में अच्छे संस्कार एवं मूल्यों के विकास में अभिभावक, घर एवं परिवार की भी अहम् भूमिका होती है। परन्तु इस भौतिकतावादी युग में अभिभावकों के पास इतना समय नहीं रहता है कि वे बालकों को संस्कारित शिक्षा देने में अपना सम्पूर्ण योगदान दे सके। ऐसी स्थिति में विद्यालय ही एकमात्र ऐसा माध्यम रह जाता है जहॉ उन्हें मूल्यपरक शिक्षा दी जा सकती है और विद्यार्थियों में मूल्यों का संवर्धन किया जा सकता है। सामान्यतः प्रत्येक विद्यालय में निम्नांकित दो प्रकार की गतिविधियों का संचालन किया जाता है –

(1) पाठ्यक्रमीय गतिविधियॉ (Curricular Activities)

(2) पाठ्य सहगामी गतिविधियॉ (Co-curricular Activities)

(1) पाठ्यक्रमीय गतिविधियॉ (Curricular Activities)

कक्षा शिक्षण के अन्तर्गत विद्यार्थियों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन के माध्यम से विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास किया जा सकता है। विद्यालय स्तर पर सामान्यतः हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, इतिहास, गणित, विज्ञान, भूगोल इत्यादि विषयों का अध्यापन करवाया जाता है। इन विषयों के अन्तर्गत प्रत्येक विषय में अपनी प्रकृति के अनुसार मूल्य सन्निहित होते हैं। शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण के माध्यम से छात्रों में मूल्यों का विकास कर सकता है। अतः शिक्षक को कक्षा में मूल्य केन्द्रित शिक्षण करवाना चाहिए। इस हेतु पाठ पढ़ाने से पूर्व शिक्षक को उस पाठ को बहुत अच्छी तरह से पढ़कर यह अवगत हो जाना चाहिए कि इस पाठ में कौन–कौन से मूल्य समाहित हैं? और इन मूल्यों का बालक में किस प्रकार से विकास किया जा सकता है? शिक्षण के समय प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उन मूल्यों को छात्रों को आत्मसात् करवाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

शिक्षक द्वारा कक्षा शिक्षण से पूर्व निर्मित पाठ योजना (दैनिक अध्यापक डायरी) में उद्देश्य निर्धारण मूल्य केन्द्रित किए जाने चाहिए। उद्देश्य लेखन में इन मूल्यों को अवश्य लिखा जाना चाहिए। वास्तविक कक्षा शिक्षण एवं मूल्यांकन में इन मूल्यों का प्रतिबिम्ब दिखना चाहिए। कक्षा शिक्षण में जिन मूल्यों को चिह्नित किया है उन मूल्यों पर आधारित ही गृहकार्य भी दिया जाना चाहिए। शिक्षक द्वारा विभिन्न सामयिक परीक्षाओं के माध्यम से इन पाठित एवं निहित मूल्यों का परीक्षण किया जाना चाहिए एवं इन्हीं मूल्यों पर आधारित ही गृहकार्य भी दिया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी उन मूल्यों को गहनता से समझ सके एव जीवन में उनका उपयोग कर सके। शिक्षक द्वारा नियमित रूप से मूल्य विकास के सन्दर्भ में विद्यार्थियों का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष, औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप में मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

(2) पाठ्य सहगामी गतिविधियॉ (Co-curricular Activities)

अध्ययन–अध्यापन के अतिरिक्त भी विद्यालय में अनेक गतिविधियॉ संचालित की जाती है जैसे–सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधि, खेलकूद एवं योग शिक्षा, प्रार्थना सभा, एन.सी.सी., स्काउट इत्यादि। यह गतिविधियॉ विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने के उद्देश्य से संचालित की जाती हैं। इन सभी गतिविधियों का संचालन सामान्यतः प्रत्येक विद्यालय में कक्षा–शिक्षण के साथ–साथ किया जाता है और विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने का प्रयास किया जाता है इन गतिविधियों को मूल्य संवर्धन के सन्दर्भ में संचालित किया जाना चाहिए।

विद्यालय की प्रार्थना सभा में प्रतिदिन एक शिक्षक द्वारा मूल्य आधारित प्रेरक प्रसंग सुनाना चाहिए। शिक्षकों द्वारा सम्पूर्ण माह पर्यन्त सुनाए गए प्रेरक प्रसंगों का रिकॉर्ड रखा जाए तत्पश्चात् इन पर आधारित सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक परीक्षा माह के अन्त में कक्षा स्तर (Class Level) पर आयोजित की जाना चाहिए। इसमें सर्वोच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्र को पारितोषिक प्रदान किया जाना चाहिए। साथ ही प्रार्थना सभा में छात्रों को भी मूल्य आधारित प्रेरक प्रसंग सुनाने हेतु अभिप्रेरित किया जाना चाहिए।

विद्यालयों को अपने स्तर पर मूल्य आधारित वर्ष मनाया जाना चाहिए। इस हेतु सम्बन्धित मूल्य आधारित विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं (वाद–विवाद, निबन्ध लेखन, आशुभाषण, रंगोली इत्यादि) का आयोजन किया जाना चाहिए। पुस्तकालय में मूल्य शिक्षा पर आधारित अच्छा साहित्य उपलब्ध करवाया जाना चाहिए या छात्रों को इसे पढ़ने हेतु अभिप्रेरित किया जाना चाहिए। पाठ्य सहगामी क्रियाओं को मूल्य शिक्षा का सशक्त माध्यम बनाया जाना चाहिए। जैसे–खेलों,सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, अनुशासन, सहयोग इत्यादि मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

विद्यार्थियों को इस प्रकार का कार्य (Task) क्रिया जाना चाहिए कि वह विभिन्न स्थानों जैसे अस्पताल, डाकघर, बस स्टेशन, रेलवे स्टेशन इत्यादि स्थलों पर जाकर लोगों के द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्रक्रिया की सूची बनाकर लाए। तत्पश्चात् छात्रों को निर्देश देवें कि इनमें से आपकों कौन–कौन से कार्य अच्छे लगे एवं कौन–कौन से कार्य अच्छे नहीं लगे। कारण सहित लिखने का निर्देश देवें। इस प्रकार बालक में करणीय एवं अकरणीय में भेद करते हुए मूल्यों का विकास हो सकेगा। इसी प्रकार दैनिक समाचार

पत्रों से इस प्रकार के समाचारों का संकलन करके लाने हेतु विद्यार्थियों को कहा जाए कि ऐसी सूचनाएँ सकारण लिखिए जो जीवन में उतारने/करने योग्य एवं नहीं उतारने/करने योग्य है इससे विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास हो सकेगा।

विद्यालय में लिखे हुए आदर्श वाक्यों/मूल्यों के प्रति छात्रों को शिक्षकों द्वारा जागरूक बनाना चाहिए एवं इनका महत्व बताकर छात्रों को इन मूल्यों को जीवन में उतारने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। प्राथमिक स्तर पर नैतिक एवं आदर्श कहानियॉ सुनाकर मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए एवं उच्च स्तर पर अच्छे शिक्षाविदों एवं आदर्श व्यक्तियों को विद्यालय में आमंत्रित करके विद्यार्थियों में मूल्य संवर्धन का प्रयास किया जा सकता है। छात्रों को राष्ट्रीय प्रतीकों, स्वतंत्रता संग्रामों, राष्ट्रीय ध्वज इत्यादि विषयों पर अधिकतम साहित्य का संकलन करने हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। शिक्षकों को स्वहित से ऊपर उठकर सार्वजनिक सम्पत्ति की सुरक्षा का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास करने के लिए शिक्षक का व्यवहार और आचरण भी उसी अनुरूप होना आवश्यक है। शिक्षक को अपने व्यवहार द्वारा नियमितता, समय की पाबन्दी, अनुशासन, स्नेह, वात्सल्य, प्रतिबद्धता, निष्पक्षता, समानता, सर्वधर्म समभाव तथा प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए।

अन्त में सारांशतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षक द्वारा पाठ का विश्लेषण करके पाठ में चिह्नित मूल्यों पर आधारित शिक्षण एवं मूल्यांकन किया जाना चाहिए। विद्यालय में मूल्य आधारित पाठ्य सहगामी क्रियाएँ आयोजित करके, मूल्य आधारित प्रेरक प्रसंग सुनाकर, महापुरूषों की जीवनियॉ एवं आदर्श बताकर, मूल्य आधारित गतिविधि (Task) करवाकर, स्वचिंतन करवाकर, स्काउट, एन. सी.सी. इत्यादि में छात्रों को सहभागी बनाकर श्रेष्ठ उपलब्धि एवं व्यवहार हेतु छात्रों को सम्मानित करके, मूल्य आधारित स्वस्थ प्रतियोगिताएँ आयोजित करके एवं इसी प्रकार मूल्य प्रतिबिम्बित शिक्षण एवं अधिगम द्वारा विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्त, नत्थू लाल (2002). *मूल्यपरक शिक्षा,* अजमेर : कृष्णा ब्रदर्स।
2. गुप्त, तनमुख राय (1998). *नैतिक शिक्षा,* नई दिल्ली : सूर्य प्रकाशन।
3. शर्मा, हरिदत्त (2002). *अनुशासन और नैतिकता,* नई दिल्ली : ज्ञानदीप प्रकाशन।
4. Goel, B.R. (1979). *Documents on Social Moral and Spiritual Values in Education*, New Delhi: NCERT.
5. एन.सी.ई.आर.टी. (2005). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा,* नई दिल्ली।
6. A.H., Maslow (1959). New Knowledge in Human Values, New York: Harper and Bro.
7. गुप्त, नत्थू लाल (1982). *मानव मूल्यों की खोज,* नागपुर : विश्वभारती प्रकाशन।

**** Corresponding Author:***

खुशलता श्रीमाली, *सहायक आचार्य (शिक्षा)*

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)

Email : shrimalikl1982@gmail.com, मोबाइल नं- 9660708781